राज्य अध्याय 21

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	***साझा करना*** *(20 मिनट)* ***(शांत समय)*** **भजन संहिता 31,32,33 व 34**

अपनी बारी *आने* पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 23,24,25 व 27) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(रोमियों में प्रमुख वचन)*** **(8) रोमियों 5:3-4**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन*** करें:

(8) रोमियों 5:3-5। केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यह जानकर कि क्लेश से धीरज, और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है; और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) ***(यीशु के दृष्टांत)*** **"भोज में आरक्षित स्थान"** **और "फरीसी और चुंगी लेने वाला"**

लूका 14:8-11 में भोज में आरक्षित स्थान और
लूका 18:8-11 में फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत
परमेश्वर के राज्य में नम्रता के विषय में हैं।

''एक दृष्टांत'' स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी है। यह एक सच्ची जीवन कहानी या चित्रण है जिसे आत्मिक सत्य को सिखाने के लिए बनाया गया है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और नवीनीकरण की

आवश्यकता के साथ सामना कराने के लिए सामन्य और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया। हम इस दृष्टांत का अध्ययन करने के लिए दृष्टांत अध्ययन के छः दिशानिर्देशों का प्रयोग करेंगे (देखें नियमावली 9, संपूरक 1)।

क. भोज में आरक्षित स्थान का दृष्टांत

पढ़ें लूका 14:1-14।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टांत की कहानी अलंकारिक भाषा में बताई गई है और दृष्टांत का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।
चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?
ध्यान दें।

यह दृष्टांत एक प्रोत्साहन के रूप में है।

सम्मान के स्थान। हर देश की सभ्यता के अपने नियम होते हैं। विवाह में मेज पर सम्मान की सभ्यता के संबंध में इस्त्राएल के नियम काफी सख्त थे। जबकि एक घर में एक मेज हो सकती है, वहीं विवाह के भोज में मेहमानों की सख्यां के आधार पर कई मेज हो सकती हैं। उन दिनों में, लोग कुर्सियों पर नहीं बैठते थे, बल्कि सोफे पर लेटते थे। तीन सोफों को एक नीची मेज के साथ ''U'' के आकार में व्यवस्थित किया जाता था। तीनों सोफों में से प्रत्येक पर एक एक व्यक्ति अपने बांए हाथ के सहारे से अपना सिर मेज की ओर किए हुए और अपने पैरों को मेज के किनारे से दूर लटका कर लेटा करते थे। वे खाने के लिए अपने दाहिने हाथ का प्रयोग करते थे। मेज के चारों ओर तीन सोफों के यह नौ स्थान इस्त्राएली लोगों के मन में अलग अलग महत्वपूर्ण स्थानों या ''सम्मान के स्थान'' का प्रतिनिधित्व करते थे।

एक यहूदी विद्वान के अनुसार, सम्मान के स्थानों को निम्नलिखित तरीके से व्यवस्थित किया जाता थाः बांए पैर के शीर्ष से दाहिने पैर के शीर्ष तकः संख्या 5,4,6, फिर 2,1,3 फिर 8,7,9। हालाँकि, किसी ने सोचा होगा क्योंकि ''दाहिनां हाथ'' एक व्यक्ति को विशेष सम्मान प्रदान करता था (यूहन्ना 1:18; 13:23-25) सम्मान के स्थानों को निम्नलिखित तरीकों से व्यवस्थित किया जा सकता थाः बांए पैर के शीर्ष से दाहिने पैर के शीर्ष तकः सख्यां 9,7,8 फिर 3,1,2, फिर 6,4,5। जो महत्वपूर्ण है वह यह है कि यह एक निश्चित क्रम था जिसमें लोग बैठे थे। बेशक, लोगों के मन में स्थान 1,2 और 3 सबसे महत्वपूर्ण सम्मान के स्थान थे।

स्थानों की नियुक्ति। मेजबान, जो कि अक्सर घर का मालिक हुआ करता था, उन स्थानों को निर्धारित किया करता था जहां प्रत्येक आंमत्रित मेहमान को बैठना चाहिए। यीशु ने कहा, ''जब कोई तुझे विवाह के भोज में बुलाए, तो मुख्य जगह में न बैठना..... लेकिन जब तू बुलाया जाए, तो सबसे नीची जगह जा बैठ।'' कहानी का पहला भाग एक मेहमान की कल्पना करता है, जो कि एक ऐसे स्थान में बैठ गया जो उसके लिए नहीं था। वह किसी दूसरे व्यक्ति के लिए था, जिसे मेजबान

अधिक आदर के योग्य समझता था। तो, जब मेजबान ने देखा कि क्या हुआ, तो उसने आकर उस पहले अनाधिकृत मेहमान से कहा, ''इस व्यक्ति को अपना स्थान दे।'' सार्वजनिक रूप से इस अपमान से शर्मिंदा और अपमानित होने पर इस ढ़ीठ मेहमान को अपना स्थान छोड़ कर सबसे नीची जगह में जाकर बैठना पड़ा, क्योंकि इस समय तक सारे स्थान भरे जा चुके थे। और, यदि अभी भी वहां कुछ खाली स्थान होते भी, फिर भी वह दूसरी बार इस तरह के अपमान का अनुभव नहीं करना चाहेगा। कहानी का दूसरा भाग इस मेहमान को सबसे नीचा स्थान लेते हुए कल्पना करता है। तो, जब मेजबान ने देख कि क्या हुआ, वह आया और उसने इस विनम्र मेहमान से कहा, ''हे मित्र आगे बढ़ कर एक बेहतर स्थान पर बैठ।'' सभी मेहमानों की उपस्थिति में सम्मानित होकर, वह अपना स्थान ग्रहण करता है।

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की ''कहानी'' के संदर्भ में दृष्टांत का ''समायोजन'' और ''स्पष्टीकरण या लागूकरण'' शामिल हो सकता है। दृष्टांत का *समायोजन* दृष्टांत को बताने के अवसर या दृष्टांत को बताने के समय की *परिस्थितियों* के विषय में बता सकता है। समायोजन आमतौर पर दृष्टांत की कहानी से *पहले* और स्पष्टीकरण या लागूकरण आमतौर पर दृष्टांत की काहनी के *बाद* पाया जाता है।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन लूका 14:1-7 में पाया जाता है।

सब्त के दिन का महत्वपूर्ण भोज। यीशु ने कई बार फरीसियों के साथ खाया (लूका 7:36; 11:37; 14:1)। इस बार उन्हें सब्त के दिन के महत्वपूर्ण भोज में आमंत्रित किया गया। फरीसियों के सख्त सब्त कानूनों के कारण, भोज की तैयारी एक दिन पहले कि गई थी। हम नहीं जानते कि यीशु को क्यों आमंत्रित किया गया था, लेकिन बाइबल बताती है कि वे उसे करीब से देख रहे थे। यीशु को आमंत्रित करने का उद्देश्य शायद यही था कि यह फरीसी उन अन्य फारीसियों और व्यवस्थापकों के साथ मिलकर जिन्हें उसने अमंत्रित किया था, यीशु के विरूद्ध दोष लगाने का आधार खोज रहे थे। शायद उन्होंने जलन्धर के रोग से ग्रस्त व्यक्ति को भी वहाँ इसलिए रखा ताकि वह यीशु को सब्त के दिन चंगा करने का प्रलोभन दे सकें। हलाँकि, यह निश्चित नहीं है, क्योंकि उन दिनों लोगों का बिना बुलाए चले आना असमान्य नहीं था (लूका 7:37-38)।

यीशु ने सबसे पहले इन फरीसियों और व्यवस्थापकों से पूछा, ''क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है?'' *कोई भी* उत्तर देने के लिए *राजी नहीं था।* तो यीशु ने उस बीमार व्यक्ति को चंगा किया और वापस भेज दिया। फिर उन्होंने इन फरीसियों और व्यवस्थापकों से पूछा, ''तुम में से ऐसा कौन है, जिसका गदहा या बैल कुएँ में गिर जाए और वह सब्त के दिन उसे तुरन्त बाहर न निकाले?'' इस बार, *कोई भी उत्तर न दे सका,* क्योंकि वह यह स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे कि वे गलत थे।

सम्मान के स्थानों के लिए अनुचित छीना झपटी। यीशु मसीह द्वारा बीमार व्यक्ति को चंगा करने के बाद, आमंत्रित मेहमान (फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक) मेज के चारों और अपना आपना स्थान लेने लगे। लेकिन उन्होंने मेजबान का इंतजार नहीं किया कि वह उनके लिए स्थान निर्धारित करे। उन्होंने

सम्मान के सबसे उच्च संभावित स्थान को प्राप्त करने के लिए छीना झपटी शुरू कर दी! यह निश्चित रूप से मेज की उचित सभ्याता का उल्लंघन था! इस मुद्दे पर यीशु ने आरक्षित स्थानों का दृष्टांत कहा।

(2) इस दृष्टांत की कहानी लूका 14:8-10 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत का स्पष्टीकरण या लागूकरण लूका 14:11 में निहित है।

यीशु ने सिखाया, "जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा, और जो कोई आपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।"

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय। यीशु ने दृष्टांत की कहानी में हर एक विवरण का इरादा कुछ विशेष आत्मिक महत्व समझाने के लिए नहीं किया था। दृष्टांत रूपक कथा नहीं है! प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए हमें दृष्टांत की कहानी के हर एक विवरण को विशेष मनमाना आत्मिक महत्व नहीं देना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

यीशु इस दृष्टांत की कहानी के किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय दें. दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषयवस्तु) या तो स्पष्टीकरण या लागूकरण में पाया जाता है या फिर स्वयं कहानी में। जिस प्रकार यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या लागू किया, हम जानते हैं कि हमें दृष्टांतों की व्याख्या किस प्रकार करनी चाहिए। एक दृष्टांत में समान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ, स्थापित करने के लिए एक केंद्रीय बिंदु होता है। इसलिए हमें कहानी के हर एक विवरण में आत्मिक सत्य को खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, लेकिन इसके बजाय हमें एक मुख्य पाठ को देखना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 14:8-11 में विवाह के भोज में आरक्षित स्थान का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में नम्रता" के बारे में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा, और जो कोई आपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।"

नम्रता परमेश्वर के राज्य में मूलभूत विशेषताओं में से एक है! इस दृष्टांत के संदर्भ में, हम देखते हैं कि यीशु मसीह विनम्र है। वह ऐसे लोगों के साथ मिलने के लिए भी इच्छुक हैं जो अक्सर उनके दुश्मने थे। फिलिप्पियों 2:5-11 सिखाता है कि यीशु मसीह ने अपना अलौकिक स्वभाव छोड़ कर मनुष्य का स्वरूप धारण कर लिया, मनुष्यों के दास बने और क्रूस पर एक अपराधी के समान मरे।

इसलिए, परमेश्वर के राज्य के नागरिक यीशु मसीह के नक्शेकदम पर चलते हैं और साथ ही स्वयं को नम्र भी करते हैं। वे सम्मान के स्थानों के लिए या अगुवेपन के स्थानों के लिए छीना झपटी नहीं करते, लेकिन नम्रता से दूसरों को स्वयं से बेहरत समझते हैं (फिलिप्पियों 2:3-4)। इस दृष्टांत के लागूकरण में हम सीखते हैं कि परमेश्वर स्वयं वह हैं जो घमंड़ी व्यक्ति को नम्र करते हैं, लेकिन नम्र व्यक्ति को ऊँचा करते हैं।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

परिचय। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सत्य, बाइबल के अन्य लेखांशों में सिखाए गए सत्य के समानांतर या विपरीत हो सकता है। सबसे महत्वपूर्ण विपरीत संदर्भ को खोजने की कोशिश करें जिससे दृष्टांत की व्याख्या करने में हमारी सहायता हो। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और चर्चा करें। यह लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?

नबूकदनेस्सर का घमण्ड। *पढ़ें* दानिय्येल 4:29-37। राजा नबूकदनेस्सर अपने दिनों में पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली राजा था। उसने एक महान साम्राज्य पर शासन किया और बड़े बड़े काम किए। लेकिन जब वह यह सोचने लगा कि वह बेबीलोन का निर्माण अपनी सामर्थ्य से करेगा, तब परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और उसे एक जानवर के समान रहने तक नीचा किया। जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा! लेकिन सालों बाद, जब उसने परमेश्वर की महिमा और सम्मान किया, तो उसका मानसिक संतुलन और सिंहासन फिर से पुर्नस्थापित किया गया और वह पहले से भी बड़ा हो गया। जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा!

हेरोदेस का घमण्ड। *पढ़ें* प्रेरितों 12:21-23। राजा हेरोदेस अपने दिनों में कोई बड़ा या महान राजा नहीं था। लेकिन फिर भी उसने इस प्रकार व्यवहार किया कि जैसे वह महत्वपूर्ण और बड़ा राजा था। जब लोगों ने उसके विषय में कहा कि वह परमेश्वर के समान है, तब उसने उन्हें नहीं डाँटा और न ही बाइबल के परमेश्वर को सम्मान दिया। तब परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने उसे मारा, और उसके मरने से पहले ही कीड़ों ने उसे खा लिया। ''जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा।''

पौलुस की नम्रता। *पढ़ें* 1कुरिन्थियों 15:9-10; 2कुरिन्थियों 12:9-12; इफिसियों 3:7-9; 1तीमुथियुस 1:15-16। प्रेरित पौलुस अपने आप को ''प्रेरितों में सबसे छोटा'', ''परमेश्वर के लोगों में सबसे छोटा'', ''संसार के पापियों में से सबसे बड़ा'', और यहाँ तक कि ''कुछ भी नहीं'' (2कुरिन्थियों 12:11) समझता। वह स्वंय को लगातार नम्र करता है (गलातियों 2:20; 6:14)। और फिर भी, परमेश्वर का अनुग्रह उसके जीवन में बढ़ा। परमेश्वर के अनुग्रह के कारण उसने अन्य प्रेरितों से अधिक कठिन परिश्रम किया (1कुरिन्थियों 15:10)। इस प्रकार, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई किस पद पर है, नम्रता एक व्यक्ति के हृदय की मनोवृत्ति में, जिस प्रकार वह अपनों और दूसरों के विषय में बोलता है, और दूसरों के प्रति व्यवहार, में व्यक्त की जाती है।

पुराने नियम में नम्रता और घमण्ड। *पढ़ें* नीतिवचन 25:6–7; 26:12; यशायाह 2:6–22; 14:12–15; 57:15। पुराने नियम में ऐसे कई लेखांश हैं जो परमेश्वर के राज्य के लोगों के बीच नम्रता की आवश्यकता के बारे में सिखाते हैं। इस दृष्टांत को बाताते समय शायद यीशु मसीह के मन में नीतिवचन 25:6–7 रहा होगा। यह कहता है, ''राजा के सामने अपनी बड़ाई न करना और बड़े लोगों के स्थान में खड़ा न होना; क्योंकि जिस प्रधान का तू ने दर्शन किया हो उसके सामने तेरा अपमान न हो वरन् तुझ से यह कहा जाए, 'आगे बढ़ कर विराज'।'' ''यदि तू ऐसा मनुष्य देखे जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान बनता हो, तो उससे अधिक आशा मूर्ख ही से है'' (नीतिवचन 26:12)।

यशायाह 14:12–15 में, बेबीलोन के राजा के पतन के संदर्भ में शैतान के पतन का वर्णन किया गया है। दोनों परमेश्वर के तुल्य होना चाहते थे और दोनों घमंड़ के कारण गिर गए। यशायाह 57:15 सिखाता है कि ''परमेश्वर जो ऊँचे और पवित्र स्थान में वास करता है (अर्थात स्वर्गीय मंदिर), वह उनके संग भी रहता है जो खेदित और नम्र हैं, कि नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करे!'' और यशायाह 2:6–22 चेतावनी देता है कि प्रभु के दिन, अर्थात यीशु मसीह के दूसरे अगमन पर अंतिम न्याय के दिन, आदमियों की घमंड़ भरी आँखे नीची की जाएँगी और मनुष्यों का घमंड़ दूर किया जाएगा; और उस दिन केवल यहोवा ही ऊँचे पर विराजमान रहेगा! इसलिए नम्रता एक व्यक्ति के आत्म–आंकलन, मनोवृत्ति, बोलने और व्यवहार द्वारा व्यक्त की जाती है।

नए नियम में नम्रता और घमण्ड। *पढ़ें* मत्ती 18:4; 20:25–28; 23:8–12; लूका 22:27; यूहन्ना 13:1–15; फिलिप्पियों 2:1–8; याकूब 4:6; 1पतरस 5:5–6। नए नियम में ऐसे बहुत से लेखांश है जो परमेश्वर के राज्य के लोगों के बीच नम्रता की आवश्यकता के विषय में सिखाते हैंः मत्ती 18:4 कहता है, ''जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा!'' मत्ती 20:25–28 कहता है कि जबकि, संसार के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं और अधिकार जताते हैं, वहीं मसीही कलीसिया के अगुवों को लोगों की देख रेख में उनका सेवक होना चाहिए। मत्ती 23:8–12 कहता है कि फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों को ''गुरू'', ''पिता'' या ''शिक्षक'' कहलाना पंसद है, लेकिन मसीहियों को ''भाई'' या ''सेवक'' कहलाने का चुनाव करना चाहिए। लूका 22:27 दर्शाता है कि यीशु स्वयं लोगों के बीच में एक सेवक थे! और 1पतरस 5:5 चेतावनी देता है कि परमेश्वर घमंड़ का सामना करता है, परन्तु नम्र व्यक्ति को अनुग्रह देता है! इस प्रकार, नम्रता विशेषरूप से अगुवेपन के स्थान में लोगों पर अधिकार जता कर नहीं, बल्कि उन गुणों के द्वारा लोगों की सेवा करने के द्वारा व्यक्त की जाती है जो परमेश्वर ने प्रत्येक के सौंपे हैं।

वंचितों के साथ जुड़ना। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोगों की एक महत्वपूर्ण विशेषता है *अतिथि–सत्कार* करना (रोमियों 12:13)।

पढ़ें लूका 14:12–14; मत्ती 25:34–40। यीशु के पास केवल आमंत्रित मेहमानों के लिए ही सबक नहीं है। उनके पास मेजबान के लिए भी सबक है। वह कहते हैं, ''जब तू दिन या रात का भोज करे, तो अपने मित्रों या भाईयों या कुटुम्बियों को मत बुला, कहीं ऐसा न हो कि वे भी तुझे नेवता दें, और तेरा बदला पूरा हो जाए। परन्तु जब तू भोज करे तो कगांलों, टुण्डों, लंगड़ों और अन्धों को बुला। तब तू धन्य होगा, क्योंकि उनके पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं, परन्तु तुझे धार्मियों के जी उठने पर इस का प्रतिफल मिलेगा।'' यीशु सिखाते हैं कि उनके राज्य के लोगों के लिए यह बहुत

महत्वपूर्ण है कि वे *अपने समाज के वंचित लोगों के साथ जुड़े!* यदि अमीर केवल अमीर के साथ, ज्ञानी केवल ज्ञानी के साथ और प्रभावशाली केवल प्रभावशाली के साथ ही जुड़ेंगे तो बाकि समाज का क्या होगा ?

परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोगों की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है उनके वंचित भाईयों और दूसरों के प्रति प्रेम और सहयोग, चाहे वे दुनिया में कहीं भी हों (मत्ती 25:34-40)।

इस प्रकार नम्रता को निम्न के द्वारा व्यक्त किया जा सकता हैः

- अतिथि सत्कार करना (रोमियों 12:13)
- समाज में वंचितों के साथ मेलजोल (लूका 14:12-14)
- वंचित मसीहियों के लिए प्रेम प्रदर्शित करना (मत्ती 25:34-40)।

ख. फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत

पढ़ें लूका 18:9-14।

1. दृष्टांत की स्वभाविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं ?
ध्यान दें।

दो व्यक्ति। मंदिर सभी धार्मिक गतिविधियों के लिए एक स्थान था। वहां सर्वजनिक धार्मिक सभाएँ होती थी और व्यक्तिगत रूप से लोग बलिदान चढ़ाने और प्रार्थना के लिए आते थे। यहूदियों में, हर दिन तीन बार प्रार्थना करने का रिवाज था (दानिय्येल 6:10)। ये दो व्यक्ति संभवतः प्रार्थना के नियमित समय पर मंदिर में प्रार्थना करने के लिए आए थे।

फरीसियों को आम तौर पर बहुत ही धर्मनिष्ठ माना जाता था और वे स्वयं भी खुद को बहुत धर्मनिष्ठ मानते थे। ऐसे स्थान में प्रार्थना करना जहाँ लोग उन्हें देख सकें, उनके पंसदीदा शौक़ में से एक था (मत्ती 6:5; लूका 20:47)।

चुंगी लेने वालों को आम तौर पर लालची, लूटरें और विश्वासघाती के रूप में देखा जाता था। उस समय इस्त्राएल में चुंगी लेने की प्रणाली निम्नानुसार काम करती थी। रोमि सरकार ने बहुत से यहूदियों को चुंगी लेने का अधिकार बेच दिया था जिन्होंने इसके लिए बहुत पैसा चुकाया (''कर-किसान'')। उन्हें आयात और निर्यात के साथ-साथ उन व्यापारियों से भी चुंगी लेने का विशेषाधिकार प्राप्त था जो उस क्षेत्र से गुजरते थे। चुंगी लेने के मुख्य कार्यालाय कैसरिया, कफरनहूम और यरीहो में स्थित थे। इन कर-किसानों ने चुंगी लेने का अधिकार जक्कई (लूका 10:2) जैसे ''मुख्य चुंगी लेनेवालों'' से किराए पर लिया होगा। इन मुख्य चुंगी लेने वालों ने लेवी (लूका 5:27) के समान सामान्य चुंगी लेने वालों को चुंगी वसूलने के काम पर रखा होगा। ये चुंगी लेने वाले, लोगों से जो कुछ निकलवा सकते थे, वसूल किया करते थे और यह अक्सर एक बड़ी धनराशि होती थी। इसलिए चुंगी लेनेवालों की जबरन वसूली करने वालों के रूप में प्रसिद्ध थे। यदि चुंगी लेने वाले

यहूदी होते, तो उन्हें भी विश्वासघाती के रूप में देखा जाता क्योंकि उन्होंने विदेशी उत्पीड़कों का सहयोग किया। बेशक, विदेशी उत्पीड़नकर्ता (रोमि सरकार) चुंगी लेने वालों को बचाते थे।

दो प्रार्थनाएँ। फरीसी खड़ा हुआ और प्रर्थाना की। हाथों और आँखों को उठा कर, खड़े होकर प्रार्थना करना, असमान्य नहीं था (1तीमुथियुस 2:8)। वह संभावित रूप से उस स्थान में खड़ा हुआ जहाँ अधिक लोग उसे देख पाएं। बाहरी रूप से वह परमेश्वर को सम्बोधित कर रहा था, लेकिन अंदरूनी रूप से वह स्वयं से स्वयं के बारे में ही बात कर रहा था। अपनी प्रार्थना के दौरान वह स्वयं को श्रेय दे रहा था। उसने अपनी तुलना दूसरे व्यक्ति से की। उसने अपनी तुलना सच्चे समर्पित व्यक्ति जैसे शमूएल या दाऊद से नहीं की, लेकिन वास्तव में बुरे व्यक्ति से की।

उसकी प्रार्थना के पहले भाग में *नकारत्मक* बातें शामिल थी। उसने कहा कि वह अंधेर करने वाला, अन्यायी (एक धोखेबाज) और व्याभिचारी *नहीं* है। और जब उसने कुछ ही दूर खड़े हुए चुंगी लेने वाले को देखा तो उसने यह भी जोड़ दिया कि *न ही* इस चुंगी लेने वाले के समान! उसकी प्रार्थना के दूसरे भाग में *उसके अच्छे कर्मों का घमंड़ शामिल है।* वह साल में केवल एक बार ही उपवास नहीं किया करता था जैसा कि लैव्यव्यवस्था 16:29–31 में पता चलता है, लेकिन सप्ताह में दो बार से कम नहीं करता था! वह केवल उन चीजों का ही दशमांश नहीं देता था जो व्यवस्थाविवरण 14:22–23 के अनुसार अनिवार्य थी, बल्कि जो आवश्यक था उस से भी अधिक सब भाँति के साग पात का भी दशमांश दिया करता था (लूका 11:42)। उसकी प्रार्थना में कहीं भी पाप का अंगीकार और क्षमा का निवेदन नहीं है। वह अपनी प्रार्थना को केवल दूसरों के सामने यह घोषणा करने के माध्यम के रूप में इस्तेमाल करता है कि वह कितना अच्छा व्यक्ति था। <u>उसने कुछ नहीं मांगा – उसने कुछ पाया भी नहीं</u> (याकूब 4:2)!

चुंगी लेने वाला कुछ दूरी पर खाड़ा था, अर्थात, मंदिर परिसर में वास्तविक भवन से दूर। वह अपनी आँखें नीची किए हुए खड़ा था, क्योंकि वह अपने पापमय आचरण के प्रति शर्मिन्दा था। उसने आत्म–दोष और निराशा के चिन्ह् के रूप में अपनी छाती पीटी। उसने अपनी तुलना दूसरों से नहीं की लेकिन स्वयं को *एक पापी* जाना! उसकी प्रार्थना में केवल पाप का अंगीकार और क्षमा का निवेदन शामिल था। उसने कहा, "हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।" वह अपने स्वयं के पापों और परमेश्वर की दृष्टि में दोषी होने और क्षमा की तत्काल आवश्यकता के प्रति सचेत था। वह क्षमा का भूखा और प्यासा था, अर्थात्, कि उसके पापों के विरूद्ध परमेश्वर का क्रोध दूर किया जाए और वह परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करे।

दो परिणाम। फरीसी बिना किसी बदलाव के अपने घर गया! शायद वह अपने घर पर ही रहा। लेकिन चुंगी लेने वाला धर्मी ठहरकर अपने घर गया। "धर्मी ठहरने" का अर्थ है कि परमेश्वर ने चुंगी लेने वाले को अपनी दृष्टि में पूर्ण रूप से धर्मी मानकर उसके साथ व्यवहार किया। इसका अर्थ है कि वह पूर्ण रूप से क्षमा किया गया और पूर्ण रूप से परमेश्वर के द्वारा स्वीकार किया गया!

---

2. तात्कालिक संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टांत का समायोजन, कहानी और व्याख्या या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टांत का समायोजन लूका 18:9 में निहित है।

"जो लोग अपनी स्वयं की धार्मिकता के विषय में आश्वस्त थे और दूसरों को छोटा समझते थे, उन से यीशु ने यह दृष्टांत कहा।" इस प्रकार यह सबसे अधिक संभावना है कि यीशु ने यह दृष्टांत फरीसियों के एक समूह से कहा (लूका 16:15; यूहन्ना 7:48-49)। वे अपनी "स्वयं की धार्मिकता के प्रति आश्वस्त थे", अर्थात, वे स्वयं को परमेश्वर की दृष्ट में धर्मी समझते थे, और परिणामस्वरूप धार्मिकता के भूखे और प्यासे नहीं थे। क्योंकि वे अपने स्वयं के अनुमान में धर्मी थे, इसलिए उन्हें एक चिकित्सक की आवश्यकता महसूस नहीं हुई और निश्चित रूप से पश्चयाताप की भी नहीं (लूका 5:31-32)! उन्होंने स्वयं के विषय में परमेश्वर के उद्देश्य को अस्वीकार कर दिया, अर्थात, उन्होंने परमेश्वर के उद्देश्य को अस्वीकार कर दिया कि वे अपने पापों का पश्चयाताप करें और पापों की क्षमा प्राप्त करें (लूका 7:30)!

(2) इस दृष्टांत की कहानी लूका 18:10-13 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण लूका 18:14 में निहित है।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

सिखाएं। यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 18:9-14 में, फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में नम्रता" के विषय में सिखात है।
इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा, और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।"

नम्रता परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोगों का रवैया घमंड़ी और आत्म-धर्मी नहीं होता, बल्कि इसके बजाय यर्थातवादी आत्म-ज्ञान और परमेश्वर की अनुग्रहपूर्ण क्षमा की आवश्यकता को ईमानदारी से स्वीकार करना होता है। वे अपनी नम्रता को परमेश्वर के सामने अपने पापों का अंगीकार करने के द्वारा व्यक्त करते हैं। और परमेश्वर अपनी स्वीकृति को उनके पापों को क्षमा करने के द्वारा व्यक्त करते हैं, अर्थात, अपनी दृष्टि में उन्हें धर्मी ठहरा कर। जो लोग, अपने घमंडी और आत्म-धर्मी रवैये को परमेश्वर के सामने अपने पापों का अंगीकार करने के द्वारा छोड़ देते हैं, वे इस बात का अनुभव करेंगे कि परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया है!

---

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत लेखांशो के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

भजन 14:1-3। यहाँ तक कि पुराने नियम के अनुसार, कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं! कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं! इसलिए फरीसियों की धारणा और रवैया बिल्कुल गलत था (रोमियों 3:10-12)।

भजन 32:1-5। जो कोई अपने पापों का अंगीकार करने से इंकार करता है, वह सब प्रकार की समस्याओं का अनुभव करेगा। लेकिन जो कोई अपने पापों को मान लेता है, परमेश्वर उसे क्षमा करते और आशीषित करते हैं।

भजन 51:1-12,15-17। दाऊद ने परमेश्वर के सामने अपने पापों का अंगीकार किया। टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है, वह टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानते।

भजन 103:12। ''उदयाचल अस्ताचल से जिपनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हमे से उतनी ही दूर कर दिया है।''

यशायाह 38:17। ''परमेश्वर ने हमारे सारे पापों को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है।''

यशायाह 43:25। ''परमेश्वर अपने नाम के निमित्त हमारे अपराधों को मिटा देते हैं, और हमारे पापों को याद नहीं रखते।''

यशायाह 44:22। ''परमेश्वर ने हमारे अपराधों को काली घटा के समान और हमारे पापों को बादल के समान मिटा दिया है।''

मीका 7:18-19। ''तेरे समान *परमेश्वर* कहाँ है, जो अधर्म को क्षमा करे... वह करूणा से प्रीति रखता है... वह हमो सारे पापों को समुद्र में डाल देगा।''

संक्षेप मेंः परमेश्वर एक नम्र व्यक्ति से प्रसन्न होते हैं, जो अपने पापमय स्वभाव और कजोरियों को जानता है, जो टूटे और पिसे हुए मन का है, और अपने पापों का अंगीकार करता है और जो परमेश्वर की क्षमा में आनंदित होता है (धार्मिकता)।

ग. परमेश्वर के राज्य में नम्रता के विषय में दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं और पाठों का सारांश

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में नम्रता के बारे में दृष्टांतों की मुख्य शिक्षाँए या पाठ क्या हैं?

ध्यान दें।

(1) परमेश्वर कैसा है।

सभी लोगों को, विशेष रूप से खोए हुए लोगों को पता होना चाहिए कि बाइबल के परमेश्वर और यीशु मसीह कैसे हैं। दृष्टांत के संदर्भ से हमने सीखा की यीशु मसीह नम्र हैं! वह विशेष रूप से अपने समाझ में वंचित लोगों के साथ जुड़े। वह ''पापियों और चुंगी लेने वालों के मित्र थे'' (लूका 7:34)। लेकिन साथ ही उन्होंने विशेषाधिकार प्राप्त लोगों, जैसे फरीसियों के साथ भी मिलना अस्वीकार नहीं किया, भले ही उनमें से कई उनके दुश्मन थे।

मत्ती 11:28-30 में यीशु कहते हैं, ''हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन मे दीन हूँ; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है''।

अपने आप और अपने पापों और कमजोरियों के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण रखने के लिए नम्रता की आवश्यकता होती है। यह स्वीकार करने के लिए नम्रता की आवश्यकता है कि आप 613 मानव निर्मित (यहूदी) धार्मिक नियमों के जूए तले थके हुए और बोझिल हैं। अपने बोझ को यीशु मसीह के पास लाने के लिए नम्रता की आवश्यकता है। अपने पापों और बोझों को यीशु मसीह के पास लाने के लिए नम्रता की आवश्यकता है।

आप तब अपने आप का एक यर्थाथवादी दृष्टिकोण प्राप्त करते हैं, जब आपः

- पवित्र आत्मा को यह अनुमति देते हैं कि वह आपको आपके जीवन में पाप और जो कुछ परमेश्वर की दृष्टि में सही है, उसके प्रति कायल करे और समझाए (यूहन्ना 16:8)
- बार–बार अपने आप को परमेश्वर के वचन के दर्पण में देखते हैं (याकूब 1:22–25)
- परमेश्वर के वचन के दर्पण में देखते हैं कि यीशु मसीह कौन है और उससे सीखते हैं कि नम्रता क्या है (मत्ती 11:29)।

दृष्टांत के लागूकरण से हम देखते हैं कि परमेश्वर संप्रभु हैं। वह घमंड का सामना करते हैं, लेकिन नम्र व्यक्ति को अनुग्रह देते हैं (1पतरस 5:5–6)। वे लोग, जो इस जीवन में मुख्य स्थानों को प्राप्त करने के लिए एक हाथापाई करते हैं, और दूसरों को धक्का मार कर रास्ते से हटाते हैं, सब लोगों की उपस्थिति में नम्र किए जाएंगे; अंतिम न्याय के दिन वे सभी लोगों की उपस्थिति में शर्मिंदा होंगे।

लेकिन वे लोग जो अपने पद पर बने रहते हुए भी नम्र होते हैं, जो अपनी देखभाल करने के लिए सौंपे गए लोगों पर भी प्रभुत्व नहीं जताते, लेकिन उनकी सेवा करते हैं, वे ऊँचे किए जाएंगे। वे इस जीवन में छोटे से छोटा स्थान लेने और छोटे से छोटा काम करने के लिए भी तैयार होंगे (जैसे कि पैर धोना)। अंतिम न्याय के दिन वे परमेश्वर और उनके सभी स्वर्गदूतों और सभी मनुष्यों की उपस्थिति में ऊँचे किए जाएंगे।

(2) मसीहियों को कैसा होना चाहिए।

मसीहियों को जानना चाहिए कि उन्हें कैसा होना चाहिए। मसीहियों को नम्र होना चाहिए! दृष्टांता सिखाता है कि परमेश्वर हमसे क्या चाहते हैं कि हम हों या करें। यह सिखाता हैः ‘‘जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा, और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा वह, वह बड़ा किया जाएगा।’’ नम्रता परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग अगुवेपन के पद या सम्मान के स्थानों के लिए छीना झपटी नहीं करते, लेकिन नम्रता के साथ दूसरों को स्वयं से बेहतर समझते हैं। वे वह करते हैं जो फिलिप्पियों 2:3–4 में लिखा है, ‘‘विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक केवल अपने ही हित की नहीं वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करें।’’
व्यवहारिक रूप से, जब आप नम्र होते हैं, तबः

- आप दूसरों को स्वयं से बेहतर समझते हैं
- आप इस बात के प्रति कायल होते हैं कि आप अपने आप को तभी नम्र कर सकते हैं जब आप पूर्ण रूप से परमेश्वर पर निर्भर होते हैं
- आप दूसरे व्यक्ति की सामर्थ्य और गुणों को स्वीकार करते हैं और उनकी सराहना करते हैं

- आप अपने स्वयं के दोष और गलतियों को स्वीकार करते हैं
- आप दूसरे व्यक्ति की बात को ध्यान से सुनते हैं, उसे गंभीरता से लेते हैं और उसे स्वीकार करते हैं
- आप दूसरों के हितों को बढ़ावा देने की खोज में रहते हैं, विशेषरूप से उनके जीवन में परमेश्वर के राज्य के हितों को।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) ***(प्रतिक्रियाएँ)*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***
या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) ***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "बोने वाले के दृष्टांत" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन संहिता 37, 38, 40 और 49** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(9) रोमियों 6:13।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 6:1-11।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।